निश्चितता के साथ जीना

अलीशिया कैटरीना द्वारा लिखित

नमस्कार। मेरा नाम अलीशिया कैटरीना है और मैं ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न शहर में अपनी माँ के साथ रहती हूँ; मेरी माँ का नाम है, लीलावती।

वर्ष २०१८ में, जब मैं सोलह वर्ष की थी, मैं अपनी माँ के साथ, मेलबोर्न के अपने घर से श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा अर्पित करने गई थी। मेरी सेवा संगीत विभाग में गायिका के रूप में थी।

श्रीगुरुमाई के जन्मदिवस के एक दिन पहले, गुरुमाई जी आश्रम के बगीचों में टहल रही थीं। मैं अपनी एक सहेली के साथ थी और हम दोनों ने गुरुमाई जी को देखा। मेरी सहेली तुरन्त दौड़कर उनसे मिलने गई।

मैंने गुरुमाई जी को देखकर उनकी ओर अपना हाथ हिलाया, पल भर के लिए मुझे थोड़ी झिझक हुई और फिर मैं भी गुरुमाई जी से मिलने गई। जब मैं उनके पास पहुँची तब उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे भी अपनी सहेली की तरह "निर्भीक" होना चाहिए।

बाद में उस दिन मैंने श्रीगुरुमाई के साथ हुए एक सत्संग में भाग लिया। सत्संग के दौरान एक समय पर गुरुमाई जी ने देखा कि मैं संगीत सेवाकर्ताओं के साथ नहीं बैठी हूँ। उन्होंने मुझसे इसका कारण पूछा। मैंने कहा कि मुझे निश्चित रूप से मालूम नहीं है कि मुझे कहाँ होना चाहिए।

यह सुनकर गुरुमाई जी ने मुझसे कहा कि मुझे "निश्चित तौर पर मालूम होना चाहिए"—जिसका मेरे लिए अर्थ था कि मुझे "निर्भीक होना चाहिए," क्योंकि मुझे *यह अवश्य ही* मालूम था कि मुझे कहाँ होना चाहिए।

मैं खड़ी हुई और जाकर संगीतकारों के साथ बैठ गई। गुरुमाई जी बहुत खुशी से हँसीं।

मैंने “निर्भीक होने” के गुरुमाई जी के निर्देश को अपने आप में और अपने कार्यों में निश्चित होने के एक उपाय के रूप में ग्रहण किया है। “निर्भीक” शब्द—और निर्भीकता का भाव—वह चीज़ है जिसे मैंने सोलह वर्ष की आयु में उसी क्षण से लेकर अब तक अपने साथ बनाए रखा है। हाल ही में मैं अठारह वर्ष की हुई हूँ और इस वर्ष के अन्त में, नवम्बर में मुझे स्नातक की डिग्री प्राप्त होगी। इस विचित्र समय के दौरान, माध्यमिक शिक्षा से वयस्कता में क़दम रखते हुए, मुझे गुरुमाई जी के वे शब्द याद हैं जो उन्होंने मुझसे कहे थे : “निर्भीक बनो।”

गुरुमाई जी के शब्द मुझे याद दिलाते हैं कि मैं इस प्रकार अपने कर्म करूँ और इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करूँ जिससे मेरा विशिष्ट व्यक्तित्व और मेरा बल अभिव्यक्त हो। इससे मेरे लिए परिवर्तन का सामना करना बहुत सरल हो गया है, क्योंकि मैं यह जानती हूँ कि यदि मैं “निर्भीक” बनी रहती हूँ तो मैं सचमुच स्वयं से जुड़ रही हूँ। इससे मैं भावनात्मक रूप से बहुत मज़बूत रह पाती हूँ।

गुरुमाई जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, सिखावनी रूपी यह मोती मुझे प्रदान करने के लिए, जो हर दिन मुझे सम्बल देता रहता है।

अपने एक पसन्दीदा गीत के शब्दों में कहूँ तो :

[वह गाती है :]
और क्या कहूँ, और क्या कहूँ,
बस यही कि मैं धन्य हो गई हूँ, मैं धन्य हो गई हूँ।
ॐ गुरु, हे मेरी गुरु, हे मेरी गुरुमाई जी . . .
ॐ गुरु, हे मेरी गुरु, हे मेरी गुरुमाई जी . . .

धन्यवाद।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।